

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION



ISSN 2582-5445

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSI.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

माँ दंतेष्वरी देवी, दंतेवाडा (बस्तर)

डॉ अजय कुमार शर्मा

बस्तर क्षेत्र में दंतेवाडा जिले में मां दंतेष्वरी का प्रसिद्ध षक्तिपीठ स्थापित है। कहा जाता है कि सती के षरीर से दांत का हिस्सा गिरने से दांत के नाम पर इस पावन स्थल का नाम दंतेष्वरी पड़ा। बस्तर की षस्य ष्यामला पावन भूमि में प्रवाहित जीवनदायिनी सरिताषंखिनी और डंकिनी के संगम स्थल में यह षक्तिपीठ स्थापित है। मां दंतेष्वरी छत्तीसगढ की जागृत देवी के रूप में अंचल में प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि यहां आकर मनौती मानने से मनोकामना पूर्ण होती है। बस्तर क्षेत्र की यह कुलदेवी के रूप में प्रसिद्ध है। कोई भी मंगल कार्य प्रारंभ करने के पूर्व मां दंतेष्वरी का दर्शन करना यहां की प्राचीन पंरम्परा है।

सघन वनों में आच्छादित बस्तर क्षेत्र की कुलदेवी मां दंतेष्वरी का प्रसिद्ध मंदिर के संबंध में किंवदती है कि सती के अंग प्रत्यंग में से दांत का हिस्सा रक्त सहित इसी स्थल पर गिरा था, इस कारण इस देवी को रक्तदंतिका अर्थात दंतेष्वरी देवी कहा जाता है और इसे रक्तदंतिका देवी के रूप में मान्यता है। प्राचीन बस्तर में मां दंतेष्वरी में बलि की प्रथा होने के कारण इसे आज भी रक्तदंतिका देवी कहा जाता है।

भौगोलिक संरचना एवं ऐतिहासिकता:—

बस्तर संभाग नवगठित छत्तीसगढ राज्य में तीन जिला मुख्यालय में विभक्त हो गया है— कांकेर, जगदलपुर और दंतेवाडा। दक्षिण बस्तर (दंतेवाडा) को पहचाने जाने वाले इस जिले में बस्तरिया इतिहास, संस्कृति की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। अपनी विषम भौगोलिक संरचना के कारण दूसरे क्षेत्रों से अनजान रहे इस क्षेत्र को गौरवपूर्ण विरासत प्राप्त है। रामायण काल में जिस दण्डकारण्य क्षेत्र का वर्णन प्राप्त होता है, वह यही क्षेत्र माना जाता है। अनेक षताब्दियों तक बस्तर का इतिहास अंधकारमय रहा। इस अंचल के इतिहास के उषाकाल की प्रथम किरण फूटी सातवाहन युग में। सातवाहनों (72 ई.पू. से 200 ई.) से संबधित ऐतिहासिक उल्लेख जैन बौद्ध धर्म की साहित्यिक कृतियों में प्राप्त होते हैं। सातवाहनों के उपरांत नल वंष 350—760 ई, नागवंषी 760 ई. से 1324 ई. इस क्षेत्र में षासन करने का उल्लेख मिलता है। नल वंषियों ने बारसूर एवं भैरमगढ के अनेक मंदिरों का निर्माण कराया तब राजनैतिक व्यवस्था नागवंषियों के हाथों में पहुंच चुकी थी। नागों के षासनकाल में यह क्षेत्र अपने वैभव की चरम सीमा पर थी। 14 षिल्पकला में परिपूर्ण मंदिर थे, जिनके पुरावेष आज भी विद्यमान हैं। 1324 ई.

छिन्दक नागवंशी राजा हरिष्चंद्र को हराकर चालुक्यवंशी (काकतीय वंश) अन्नमदेव ने क्षेत्र में अपनी सत्ता स्थापित की।

अन्नम देव की राज्य सीमा के संबंध में एक किंवदंती प्रचलन में है जिसके अनुसार, रियासत कालीन दौर में जब राजा अन्नमदेव वारंगल से मुगलों से परास्त होकर बस्तर क्षेत्र में प्रवेश किये, तो पराजय का दुःख तो था ही, लेकिन राज्य महत्वकांक्षा भी थी। कहते हैं कि स्वप्न में इन्हें अपनी कुलदेवी मां दंतेष्वरी के दर्शन हुए। राजा की महत्वकांक्षा को दंतेष्वरी ने उसे वरदान दिया कि मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन वे अपनी विजय यात्रा प्रारंभ करें। जहां तक भी वे जायेंगे। राज्य का विस्तार होता जाएगा, मां का यह आश्वासन था कि वह राजा के पीछे-पीछे साथ चल रही है, लेकिन साथ में शर्त रखी कि राजा पीछे मुड़कर न देखे, नहीं तो वे रुक जाएगी। दिन बीतते गये। राज्य का विस्तार करते हुए एक रात अन्नमदेव पंखिनी और डंकिनी के संगम तट पर पहुँचें कि अचानक देवी के घुंघरूओं की आवाज नदी संगम के रेत में थम गई, राजा ने मुड़ कर देख लिया, तत्पश्चात राजा ने संगम तट पर देवी को प्रतिष्ठित किया। बाद में एक भव्य मंदिर बनवाकर राजा अन्नमदेव ने अधिष्ठात्री देवी मां दंतेष्वरी मंदिर की स्थापना की एवं यह देवी का मंदिर बस्तर क्षेत्र की कुलदेवी के रूप में स्थापित षक्तिपीठ के रूप में आज अंचल में विद्यमान है। पंखिनी और डंकिनी नदियों के संगम पर बना मां दंतेष्वरी का भव्य ऐतिहासिक प्राचीन मंदिर स्थित है। पंखिनी नदी का उद्गम नंदीराज शिखर और बैलाडीला की पर्वतमालाएँ हैं। डंकिनी नदी का उद्गम टोंगरी डोंगरी से है, जो कटे कल्याण क्षेत्र से बहते हुए यह नदी दंतेवाडा में आयी है। दंतेष्वरी माई का मंदिर इसी संगम के किनारे स्थित है। इस प्रसिद्ध ऐतिहासिक, पुरातात्विक, प्राचीन मंदिर की छत्रछाया में दंतेवाडा की प्रसिद्ध फागुन मंडई का आयोजन संपन्न होता है। ऐसा माना जाता है कि माई दंतेष्वरी अपने सभी आमंत्रित देवी देवताओं के साथ होली उत्सव मनाती है। यह आयोजन फागुन शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक होता है। बसंत ऋतु में यहां का संपूर्ण जनजीवन फागुन मंडई के सम्मोहन से बंधकर इन्हीं नदियों के संगम पर एकत्रित होता है। फाल्गुन मंडई यहां के आदिवासी समाज के पारम्परिक देवभक्ति, लोकनृत्यों का अनवरत सिलसिला दस दिनों तक चलता है। मंडई की भीड़ में आत्मीय स्वजनों से हास परिहास करते हुए, सुख- दुःख की बातें करते, नृत्य करते आदिवासी लोकजीवन को इस मंडई में देखा जा सकता है। होली के पूर्व भरने वाले इस मंडई पर्व पर बसंत ऋतु की मादकता, होली की मदमस्ती, इसमें अनेक रंग भर देती है, लेकिन पूरे उत्सवी माहौल में अपने कुलदेवी मां दंतेष्वरी की आराधना इसकी प्रमुखता होती है।

मंदिर की वास्तुकला:-

धार्मिक परम्पराओं के अनुसार शिव की पत्नी सती का एक दौत यहां पर गिरा था और इसी उपलक्ष्य में यह स्थल भारतवर्ष के एक महत्वपूर्ण शक्तिपीठ के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। उपर्युक्त परम्परा में प्रतिष्ठित मंदिर कृष्ण पाषाण निर्मित षडी भुजी प्रतिमा को दंतेष्वरी के नाम से अभिहित किया गया है। इस मूर्ति के विषय में एक रोचक तथ्य यह है कि प्रतिमा के अर्ध वृत्ताकार शीर्ष खण्ड में नरसिंह द्वारा हिरण्यकश्यप के संहार का एक दृश्य उत्कीर्ण है। वैष्णव धर्म के साथ ऐसा समायोजन मंदिर के सामने परवर्ती कालीन गरुड स्तंभ से पूर्ण प्रमाणित होता है। पूर्वी दक्षिणामुखी यह मंदिर अंगभूत संयोजन से बना है, जैसे पीढी शिखर देक्कड या गर्भगृह स्तम्भ युक्त मुखशाला या सभागृह और स्तंभयुक्त नाट्यमण्डल ब्राह्मणधर्म से संबंधित अनेक मूर्तियां जैसे—विष्णु, शिव, गणेश, पार्वती, नरसिंह, द्वारपाल आदि की प्रतिमाएँ मंदिर प्रांगण के विभिन्न जगहों पर रखी हैं।

यह मंदिर वर्तमान शताब्दी के पूर्व दशकों में बस्तर के राजवंश द्वारा बत्तीस काष्ठ स्तंभों एवं खपरेल की छत वाले विस्तृत महामण्डल एवं सिंहद्वार, मुख्य प्रवेश द्वार के निर्माण कराये जाने के पूर्व इस मंदिर का निर्माण हुआ था। यह काष्ठ स्तंभ 12 फीट ऊंची तथा 4 फीट मोटी है जिसके सहारे पर मंदिर निर्मित है। सभी स्तंभ एक समान हैं।

षष्ठ भुजा वाली माई जी की यह प्रतिमा कृष्ण पत्थर से निर्मित है, जिसकी ऊंचाई 6 फीट, चौड़ाई 5 फीट तथा मोटाई 1 फीट है। (6x5x1फीट) है। मूर्ति खडी मुद्रा है, जो महिषासुर की वध करती हुई प्रदर्शित है। दंतेष्वरी माई इस प्रतिमा में दायें हाथ में खड्ग, त्रिशूल, पद्म लिए हुए हैं तथा बाएँ हाथ में घण्टा, शंख एवं राक्षस का सिर पकड़ी हुई हैं। यह मूर्ति नक्काशी युक्त है, माई जी के सिर के उपर भाग में नरसिंह अवतार रूप धारण किये हुए मूर्ति निर्मित है और नरसिंह द्वारा हिरण्यकश्यप का वध करते हुए दिखाया गया है तथा मूर्ति का दायाँ-बायाँ भाग नक्काशीयुक्त है, माई जी के सिर के उपर छत्र है, जो चांदी से निर्मित है तथा आभूषणयुक्त है एवं वर्तमान में वस्त्र से अलंकृत है और अपने पैरों के नीचे किसी को दबाया हुआ है। यह मूर्ति एक ही पत्थर पर निर्मित है। इस मूर्ति का मुंह पूर्व दिशा की ओर है। अंतराल में दो द्वारपाल बायें-दायें खड़े हैं, जो काले पत्थर की हैं, जो चार हाथ युक्त हैं दोनों पूर्णवस्था में हैं। बायें हाथ में सर्प लिए हैं। नीचे बाँये हाथ में गदा लिये हुए हैं तथा वरद मुद्रा में हैं, गले में माला, कानों में कुण्डल पहने हुए हैं और अंतराल पर विभिन्न मूर्तियाँ विद्यमान हैं, जो पूर्ण अवस्था में हैं। यह 10x8 फीट लंबी चौड़ी अंतराल निर्मित है।

21 स्तम्भों से युक्त सिंहद्वार के पूर्व दिशा में दो सिंह विराजमान हैं, जो काले पत्थर के हैं। बायें तरफ गणेश की बड़ी मूर्ति 125x90x16 से.मी है। दायें बायें दोनों ओर

नदी है तथा मुख्य दिशा में द्वारपाल विराजमान है। दायें तरफ अप्सराएँ विद्यमान हैं। सिंहद्वार की स्तम्भ साढ़े आठ फीट ऊँची और 6 फीट मोटी तथा नक्काशीयुक्त है। दायें तरफ वरद मुद्रा में देवी विराजमान है और हाथ जोड़े हुए है।



EARN YOUR

MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन



Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMSST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE